

# 成语故事 下

正坤 编



坚众奔溃，余众弃甲宵遁，  
闻风声鹤唳，皆以为王师已至，  
草行露宿，重以饥冻，死者十七八。

——《晋书·谢玄传》



中国古典文化精华

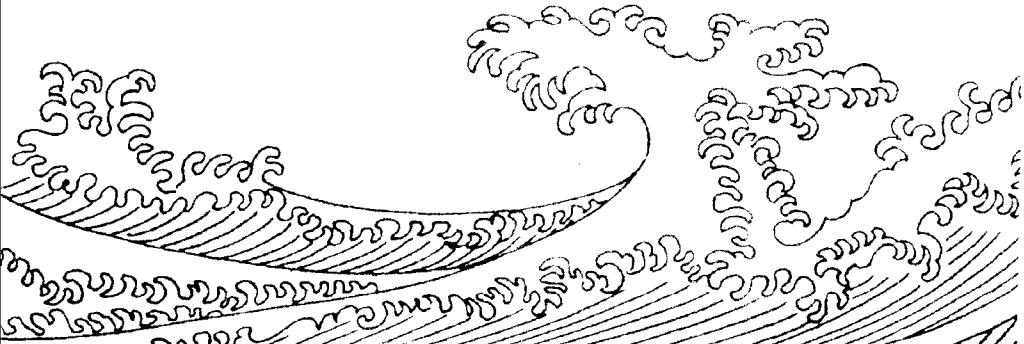


# 成语故事

下

王坤 编

中国文史出版社



# 目 录

|           |       |
|-----------|-------|
| 抛砖引玉      | (381) |
| 鹏程万里      | (382) |
| 蓬生麻中      | (383) |
| 披坚执锐      | (384) |
| 披荆斩棘      | (385) |
| 匹夫之勇      | (386) |
| 疲于奔命      | (387) |
| 皮之不存，毛将焉附 | (388) |
| 萍水相逢      | (389) |
| 平易近人      | (390) |
| 璞玉浑金      | (391) |
| 扑朔迷离      | (392) |
| 破釜沉舟      | (394) |
| 破镜重圆      | (395) |
| 剖腹藏珠      | (396) |
| 七步之才      | (397) |
| 漆身吞炭      | (398) |
| 欺世盗名      | (400) |
| 七纵七擒      | (401) |
| 奇货可居      | (403) |
| 骑虎难下      | (404) |

|           |       |
|-----------|-------|
| 旗鼓相当      | (405) |
| 歧路亡羊      | (406) |
| 骑驴觅驴      | (407) |
| 其貌不扬      | (408) |
| 齐人攫金      | (409) |
| 杞人忧天      | (409) |
| 起死回生      | (410) |
| 千变万化      | (411) |
| 前车之鉴      | (412) |
| 千金市骨      | (413) |
| 千钧一发      | (414) |
| 千里鹅毛      | (415) |
| 千虑一得      | (415) |
| 千人所指      | (417) |
| 千万买邻      | (418) |
| 千载难逢      | (419) |
| 前功尽弃      | (420) |
| 黔驴技穷      | (421) |
| 前倨后恭      | (422) |
| 前无古人      | (423) |
| 前事不忘，后事之师 | (424) |
| 强弩之末      | (426) |
| 巧夺天工      | (427) |
| 巧取豪夺      | (428) |
| 功亏一篑      | (429) |

|           |       |
|-----------|-------|
| 锲而不舍      | (430) |
| 亲痛仇快      | (431) |
| 秦晋之好      | (432) |
| 秦镜高悬      | (433) |
| 青出于蓝      | (434) |
| 倾国倾城      | (435) |
| 青云直上      | (436) |
| 请君入瓮      | (437) |
| 庆父不死，鲁难未已 | (438) |
| 罄竹难书      | (439) |
| 穷兵黩武      | (440) |
| 茕茕孑立      | (442) |
| 秋风过耳      | (443) |
| 秋毫无犯      | (444) |
| 求之不得      | (445) |
| 求田问舍      | (446) |
| 曲尽其妙      | (446) |
| 曲突徙薪      | (447) |
| 趋炎附势      | (448) |
| 取而代之      | (449) |
| 曲高和寡      | (450) |
| 犬牙交错      | (451) |
| 群策群力      | (453) |
| 人杰地灵      | (453) |
| 人给家足      | (455) |

|           |       |
|-----------|-------|
| 人弃我取      | (456) |
| 人人自危      | (457) |
| 人心如面      | (458) |
| 人琴俱亡      | (460) |
| 人言可畏      | (461) |
| 人自为战      | (462) |
| 任人唯贤      | (462) |
| 忍辱负重      | (464) |
| 日不暇给      | (465) |
| 日暮途穷      | (466) |
| 入木三分      | (468) |
| 如火如荼      | (469) |
| 如释重负      | (470) |
| 如鱼得水      | (471) |
| 孺子可教      | (472) |
| 人非圣贤，孰能无过 | (473) |
| 塞翁失马      | (474) |
| 三寸之舌      | (475) |
| 三顾茅庐      | (476) |
| 三令五申      | (477) |
| 三人成虎      | (478) |
| 三迁之教      | (479) |
| 三生有幸      | (480) |
| 丧家之犬      | (481) |
| 丧心病狂      | (482) |

|           |       |
|-----------|-------|
| 杀鸡焉用牛刀    | (483) |
| 杀身成仁      | (484) |
| 姗姗来迟      | (485) |
| 伤风败俗      | (486) |
| 上下其手      | (487) |
| 神工鬼斧      | (488) |
| 神机妙算      | (489) |
| 甚嚣尘上      | (490) |
| 声东击西      | (491) |
| 生花妙笔      | (493) |
| 生灵涂炭      | (493) |
| 声名狼藉      | (494) |
| 升堂入室      | (495) |
| 生吞活剥      | (496) |
| 声色俱厉      | (497) |
| 生死存亡      | (499) |
| 盛气凌人      | (499) |
| 师出无名      | (501) |
| 尸位素餐      | (501) |
| 失之毫厘，差以千里 | (503) |
| 食不甘味      | (504) |
| 十行俱下      | (506) |
| 识时务者为俊杰   | (507) |
| 食言而肥      | (507) |
| 舐犊情深      | (508) |

|         |       |
|---------|-------|
| 噬脐何及    | (509) |
| 势如破竹    | (510) |
| 世外桃源    | (511) |
| 视死如归    | (512) |
| 手不释卷    | (513) |
| 守株待兔    | (514) |
| 首鼠两端    | (515) |
| 输攻墨守    | (515) |
| 熟能生巧    | (517) |
| 数典忘祖    | (518) |
| 蜀犬吠日    | (519) |
| 束之高阁    | (519) |
| 双管齐下    | (520) |
| 水滴石穿    | (521) |
| 水落石出    | (522) |
| 水深火热    | (523) |
| 吮痈舐痔    | (524) |
| 死不旋踵    | (525) |
| 死而不朽    | (526) |
| 死灰复燃    | (527) |
| 司马昭之心   | (528) |
| 四分五裂    | (529) |
| 四海之内皆兄弟 | (530) |
| 四面楚歌    | (531) |
| 所向无前    | (532) |

|           |       |
|-----------|-------|
| 所向无敌      | (533) |
| 太公钓鱼，愿者上钩 | (534) |
| 泰山压卵      | (535) |
| 贪生怕死      | (536) |
| 贪多务得      | (537) |
| 贪得无厌      | (538) |
| 贪小失大      | (539) |
| 贪天之功      | (540) |
| 谈何容易      | (541) |
| 谈言微中      | (542) |
| 谈笑自若      | (543) |
| 弹冠相庆      | (544) |
| 探骊得珠      | (545) |
| 探囊取物      | (545) |
| 叹为观止      | (546) |
| 螳臂当车      | (547) |
| 螳螂捕蝉      | (548) |
| 天经地义      | (549) |
| 天罗地网      | (550) |
| 天下无双      | (551) |
| 天衣无缝      | (551) |
| 天真烂漫      | (552) |
| 天之骄子      | (553) |
| 睨颜人世      | (554) |
| 铁石心肠      | (555) |

|           |       |
|-----------|-------|
| 听人穿鼻      | (556) |
| 投笔从戎      | (557) |
| 投鞭断流      | (558) |
| 投鼠忌器      | (559) |
| 同仇敌忾      | (560) |
| 同甘共苦      | (560) |
| 同工异曲      | (561) |
| 同心同德      | (562) |
| 痛定思痛      | (563) |
| 痛心疾首      | (565) |
| 痛饮黄龙      | (566) |
| 推心置腹      | (567) |
| 退避三舍      | (568) |
| 图穷匕见      | (569) |
| 土崩瓦解      | (571) |
| 外强中干      | (572) |
| 完璧归赵      | (573) |
| 玩火自焚      | (574) |
| 玩物丧志      | (575) |
| 万事俱备，只欠东风 | (575) |
| 万死不辞      | (577) |
| 亡羊补牢      | (578) |
| 惘然若失      | (579) |
| 望尘莫及      | (580) |
| 望梅止渴      | (581) |

|             |       |
|-------------|-------|
| 望门投止        | (582) |
| 望洋兴叹        | (584) |
| 妄自尊大        | (585) |
| 危如累卵        | (586) |
| 威武不屈        | (587) |
| 韦编三绝        | (588) |
| 惟命是从        | (589) |
| 围魏救赵        | (590) |
| 为虎作伥        | (590) |
| 未可厚非        | (591) |
| 味如鸡肋        | (592) |
| 畏首畏尾        | (593) |
| 未雨绸缪        | (594) |
| 闻鸡起舞        | (595) |
| 刎颈之交        | (596) |
| 卧榻之侧，岂容他人鼾睡 | (597) |
| 卧薪尝胆        | (598) |
| 无出其右        | (599) |
| 无可奈何        | (600) |
| 吴越同舟        | (601) |
| 五日京兆        | (602) |
| 吴市吹箫        | (603) |
| 五色无主        | (604) |
| 物以类聚        | (605) |
| 下笔成章        | (606) |

|           |       |
|-----------|-------|
| 下车泣罪      | (607) |
| 先发制人      | (608) |
| 先声夺人      | (609) |
| 先忧后乐      | (611) |
| 项庄舞剑，意在沛公 | (611) |
| 想当然       | (613) |
| 小心翼翼      | (613) |
| 小巫见大巫     | (614) |
| 小时了了      | (615) |
| 笑里藏刀      | (616) |
| 心旷神怡      | (617) |
| 欣欣向荣      | (618) |
| 信口雌黄      | (619) |
| 信誓旦旦      | (620) |
| 惜墨如金      | (621) |
| 兴高采烈      | (622) |
| 休戚相关      | (623) |
| 行将就木      | (624) |
| 洗耳恭听      | (626) |
| 席不暇暖      | (627) |
| 胸有成竹      | (628) |
| 削足适履      | (629) |
| 羞与哙伍      | (630) |
| 栩栩如生      | (631) |
| 朽木不雕      | (632) |

|             |       |
|-------------|-------|
| 虚有其表        | (632) |
| 雪中送炭        | (633) |
| 言不由衷        | (634) |
| 言过其实        | (634) |
| 掩耳盗铃        | (635) |
| 扬扬得意        | (636) |
| 养虎遗患        | (637) |
| 野火烧不尽，春风吹又生 | (638) |
| 叶公好龙        | (639) |
| 夜郎自大        | (640) |
| 夜以继日        | (641) |
| 一败涂地        | (642) |
| 一笔勾销        | (643) |
| 一代楷模        | (644) |
| 一饭千金        | (645) |
| 一傅众咻        | (646) |
| 一鼓作气        | (647) |
| 一国三公        | (648) |
| 一挥而就        | (650) |
| 一箭双雕        | (651) |
| 一夔已足        | (652) |
| 一毛不拔        | (652) |
| 一鸣惊人        | (653) |
| 一诺千金        | (654) |
| 一暴十寒        | (655) |

|       |       |
|-------|-------|
| 一钱不值  | (656) |
| 一窍不通  | (657) |
| 一去不复还 | (657) |
| 一丘之貉  | (658) |
| 一日千里  | (659) |
| 一身是胆  | (660) |
| 一丝不苟  | (661) |
| 一网打尽  | (662) |
| 一问三不知 | (663) |
| 一误再误  | (665) |
| 依样画葫芦 | (666) |
| 一叶障目  | (667) |
| 一衣带水  | (668) |
| 一意孤行  | (669) |
| 一字千金  | (670) |
| 一字之师  | (671) |
| 疑邻盗斧  | (672) |
| 以古非今  | (673) |
| 以管窥天  | (674) |
| 以邻为壑  | (675) |
| 以卵投石  | (676) |
| 倚马可待  | (677) |
| 以貌取人  | (678) |
| 倚门倚闾  | (679) |
| 以强凌弱  | (680) |

|             |       |
|-------------|-------|
| 以身试法        | (682) |
| 以小人之心，度君子之腹 | (684) |
| 以一当十        | (685) |
| 异军突起        | (686) |
| 义无反顾        | (687) |
| 因势利导        | (688) |
| 饮醇自醉        | (689) |
| 饮鸩止渴        | (690) |
| 英雄无用武之地     | (691) |
| 迎刃而解        | (693) |
| 庸人自扰        | (694) |
| 忧心如焚        | (695) |
| 游刃有余        | (696) |
| 犹豫不决        | (696) |
| 有备无患        | (697) |
| 有脚阳春        | (698) |
| 有名无实        | (699) |
| 有恃无恐        | (700) |
| 有志竟成        | (701) |
| 愚公移山        | (702) |
| 鱼目混珠        | (703) |
| 余音绕梁        | (704) |
| 余勇可贾        | (705) |
| 与虎谋皮        | (706) |
| 羽毛未丰        | (707) |
| 鹬蚌相争        | (708) |

|               |       |
|---------------|-------|
| 欲盖弥彰          | (709) |
| 欲加之罪，何患无辞     | (710) |
| 缘木求鱼          | (712) |
| 约法三章          | (713) |
| 越俎代庖          | (714) |
| 运筹帷幄          | (715) |
| 运用之妙，存乎一心     | (716) |
| 择善而从          | (717) |
| 债台高筑          | (718) |
| 斩草除根          | (719) |
| 辗转反侧          | (720) |
| 昭然若揭          | (721) |
| 朝三暮四          | (722) |
| 招摇过市          | (723) |
| 枕戈待旦          | (724) |
| 振臂一呼          | (724) |
| 郑人买履          | (725) |
| 之乎者也          | (726) |
| 纸上谈兵          | (727) |
| 只许州官放火，不许百姓点灯 | (728) |
| 纸醉金迷          | (729) |
| 志大才疏          | (730) |
| 炙手可热          | (731) |
| 至死不悟          | (732) |
| 志在四方          | (733) |
| 置之度外          | (735) |

|           |       |
|-----------|-------|
| 中流击楫      | (736) |
| 终南捷径      | (737) |
| 忠言逆耳      | (738) |
| 众怒难犯      | (739) |
| 众叛亲离      | (740) |
| 重于泰山，轻于鸿毛 | (741) |
| 众志成城      | (742) |
| 逐鹿中原      | (743) |
| 煮豆燃萁      | (744) |
| 铸成大错      | (744) |
| 专横跋扈      | (746) |
| 专心致志      | (747) |
| 惴惴不安      | (748) |
| 捉襟见肘      | (749) |
| 自惭形秽      | (750) |
| 自相矛盾      | (751) |
| 纵虎归山      | (752) |
| 走马看花      | (754) |
| 作壁上观      | (755) |
| 作法自毙      | (755) |
| 坐观成败      | (757) |
| 坐山观虎斗     | (758) |
| 作威作福      | (759) |
| 罪不容诛      | (760) |
| 醉翁之意不在酒   | (761) |